जूते का जोड़, गोभी का तोड

मृदुला गर्ग

Joote Ka Jod Gobhi Ka Tod

by Mridula Garg

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से

प्रकाशितः अगस्त 2006

भाषाः हिंदी

मुद्रणः पेंगुइन

मूल्यः रु 175.00

आई एस बी एनः 0143 100211

ऐडिशनः पेपरबैक

फ़ॉरमेटः बी

पृष्ठः 272pp

वर्गीकरणः कहानी-संग्रह

क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** August 2005
- **Language:** Hindi
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs. 175.00
- **Cover Price:** Rs. 175.00
- **ISBN:** 0143 100211
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 272pp
- **Classification:** Anthology
- **Rights:** World

जूते का जोड़, गोभी का तोड़ में संकलित कहानियां पुरुष मन को समझने का एक प्रयास हैं। मृदुला गर्ग ने पुरुषों को आम ज़िंदगी से एक इंसान की तरह जूझते देखा है, न कि एक फ़ेमिनिस्ट के चश्मे से उन्हें सही-ग़लत के पैमाने पर तोलने की कोशिश की है। इंसान की कमज़ोरी उसका अपना मन है, वही उसे लाचार बनाता है। इन कहानियों में रोज़मर्रा की परेशानियों से जूझते, अपनी ही बनाई उलझनों में उलझते, हक़ीक़त से टकरा कर सपनों को टूटते हुए देखते ऐसे ही समाज की तस्वीरें हैं। कोमल मानवीय संवेदना ओंपर मृदुला गर्ग की गहरी पकड़ इस कहानी-संग्रह में परिलक्षित है। इन कहानियों की विशेषता यही है कि इन्हें पढ़ते हुए कभी अनायास होंठों पर मुस्कान खिंच जाती है, कभी मन सोच में डूब जाता है, तो कभी उदासी से घिर जाता है, मगर एक पल को भी पाठक को ये अपने मोहपाश से मुक्त नहीं होने देतीं।

लेखक परिचय

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्तूबर 1938 में कोलकाता में हुआ। उनकी तमाम शिक्षा-दीक्षा दिल्ली में हुई। उन्होंने अर्थशास्त्र में दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनोमिक्स से एम.ए. किया। 1975 में पहला उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' छपा। अब तक उनके छह उपन्यास, अस्सी कहानियां (संगति-विसंगति नाम से दो खंडों में संग्रहीत), तीन नाटक व दो निबंध-संग्रह छप चुके हैं। उनके निबंध देश-विदेश की श्रेष्ठ पत्रिकाओं में छपते रहे हैं।

'चित्तकोबरा' उपन्यास का जर्मन अनुवाद 1987 में जर्मनी में प्रकाशित हुआ। अंग्रेज़ी अनुवाद 1990 में। 'कठगुलाब' उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद 'कंट्री ऑफ़ गुडबाइज़' 2003 में प्रकाशित हुआ। 'अनित्य' उपन्यासका अंग्रेज़ी अनुवाद शीघ्र प्रकाश्य है। उनकी अनेक कहानियां अनेक भारतीय भाषाओं, अंग्रेज़ी, जर्मन, जापानी व चेक में अनूदित हुई हैं।

पिछले तीन वर्षों से वे इंडिया टुडे में 'कटाक्ष' नाम से पाक्षिक स्तंभ लिख रही हैं।